देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
अप्रैल 2024
Vol.-19, Issue-4(3)
Impact Factor 7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. विकास शर्मा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 19 ISSUE-4(3) (अप्रैल 2024) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. विकास शर्मा, संस्थापक
गुरू विद्यापीठ, रोहतक

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : nksihag202@gmail.com

मो. 09466532152

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>*Disclaimer :*</u>

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टाँटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के **Arial, Times New Roman** में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी **Email ID : grsbohal@gmail.com** पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

<u>नोट :-</u> उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज **7x9.5** पर टाईप कराकर **JPG** या **PDF** फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	**पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)**
खाता धारक का नाम	:	**गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी**
बैंक खाता संख्या	:	**1182000109078119**
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

अप्रेल 2024

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. विकास शर्मा	10-10
2.	गांधी जी के भाषण का प्रवासियों पर प्रभाव - अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'गांधी जी बोले थे' के सन्दर्भ में	V. Amudha, Dr. Anuradha Pakalapati	11-14
3.	विश्व भाषा की ओर बढ़ते कदम	अविनाश कुमार	15-19
4.	वैश्विक स्तर पर हिन्दी	डॉ. बीरमणि पाण्डे	20-24
5.	वैश्विक परिपेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान, संभावनाएँ तथा चुनौतियाँ	भावना गौड़	25-29
6.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान, सम्भावनाएं तथा चुनौतियां	ब्रजेन्द्र कुमार सिंह	30-34
7.	वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा का अन्तराष्ट्रीय स्वरूप	डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे	35-37
8.	भारतीय भाषाओं का महत्व - कविगण की वाणियों में	A. DEVIKA	38-43
9.	भारत की भाषा हिंदी : विकास के मार्ग	आर वेंकट हिमा	44-47
10.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान, संभावनाएं एवं योगदान	इंदिरा. वी	48-50
11.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का महत्व एवं प्रासंगिकता	डॉ. इंदुमती	51-56
12.	वैश्विक परिदृश्य पर भारतीय संस्कृति के प्रसार में हिन्दी भाषा की भूमिका	डॉ. जय प्रकाश पटेल	57-61
13.	हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, चुनौतियां और समाधान	डॉ. क्षितिजा	62-65
14.	वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी : स्थिति एवं संभावनाएं	डॉ. मुकेश कुमारी	66-69
15.	वैश्विक परिप्रेक्ष में भारतीय भाषाओं का योगदान	डॉ नागरत्ना एम्	70-74
16.	स्वातंत्र्योत्तर काळातील मराठी लोकसाहित्य अभ्यासकांची परंपरा	डॉ. किरण नामदेव पिंगळे	75-80
17.	हिंदी भाषा का योगदान, सम्भावनाएं तथा चुनौतियां	डॉ. पूजा चौहान	81-85
18.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का योगदान, संभावनाएं तथा चुनौतियां	डॉ. प्रमोद नाग	86-88
19.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में तमिल भाषा का योगदान, सम्भावनाएँ तथा चुनौतियाँ	Dr. K. Priya Naidu	89-92

20.	वैश्विक परिपेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान, संभावनाएं तथा चुनौतियाँ	राजीव कुमार भारद्वाज	93–96
21.	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी के बढ़ते कदम	डॉ. रामकली शर्मा	97–102
22.	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की संभावनाएं एवं चुनौतियां	रंजना गुप्ता	103–107
23.	सांस्कृतिक इतिहास लेखन में राजस्थानी भाषा का योगदान	डॉ. रश्मि गुर्जर	108–110
24.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान संभावनाएँ तथा चुनौतियाँ	डॉ. रेखा. जी	111–116
25.	हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य	साईमीरा जोशी	117–120
26.	वैश्वीकरण के परिपेक्ष में हिंदी का महत्व	संजय कुमार सिंह	121–124
27.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान, संभावनाएं तथा चुनौतियाँ	डॉ. शैलजा रोला	125–129
28.	हिंदुस्तान की भाषा हिंदी एवं भविष्य की हिंदी	डॉ. सुमित्रा कोतपल्ली	130–132
29.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत का योगदान	प्रो. सुषमा चौधरी	133–135
30.	राजनैतिक मूल्यों की स्थापना में भारतीय भाषाओं का योगदान	उदयसिंह	136–137
31.	भाषा और विज्ञान	उमा बंजारे	138–140
32.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा	डॉ० ऊषा रानी	141–145
33.	हिंदी का वैश्विक रूप	डॉ. वंदना प्र. पाटील	146–149
34.	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का योगदान	डॉ. वेदश्री	150–152
35.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का योगदान, सम्भावनाएँ तथा चुनौतियाँ	**Vinitha K**	**153-157**
36.	अवधी भाषा और उसका अस्तित्व	डॉ. मो. रियाज खान	158–162

संपादकीय

भाषाओं का योगदान वैश्विक सामर्थ्य में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विभिन्न संस्कृतियों और लोगों को एक साथ लाने में मदद करता है। हालांकि, भाषाओं के बीच की समस्याएँ, जैसे कि अनुवाद की कमी और सम्बंधों की अवैधता, समाधान की आवश्यकता है। तकनीकी उपाय, शिक्षा, और सांस्कतिक आवेदन के माध्यम से, हम भाषाओं के संदर्भ में समाधान ढूंढ सकते हैं।

भाषाओं का योगदान वैश्विक संवाद और समझ में महत्वपूर्ण है। इससे सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि का समर्थन होता है। हालांकि, भाषाओं के असमान योगदान के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे कि संवाद की कमी और भाषाओं के महत्व का उपेक्षण। समाधान के लिए, हमें समान रूप से सभी भाषाओं का समर्थन करना चाहिए और भाषा सीखने और शिक्षा के लिए संसाधनों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके अलावा, भाषाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी उपायों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि मशीन अनुवाद और सामाजिक मीडिया के माध्यम से अन्य भाषाओं का सीधा संवाद।

भाषाओं का योगदान वैश्विक सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। वे समाजों के बीच संचार के लिए माध्यम प्रदान करते हैं, साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर संगठनों, समझौतों और व्यापार में भूमिका निभाते हैं। भाषाएं सामाजिक समझ, साझेदारी, और विविधता के संरचनात्मक पहलुओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भाषाओं का योगदान वैश्विक सांस्कृतिक विविधता में महत्वपूर्ण होता है। भाषाएं सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं होतीं, बल्कि वे एक समुदाय की भावनाओं, विचारों, और समझ को व्यक्त करने का माध्यम होतीं। भाषाएं लोगों के विचारों और विकास को समझने में मदद करतीं हैं, जिससे सांस्कृतिक विविधता को समर्थन मिलता है। इसलिए, भाषाओं का समर्थन और संरक्षण महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे हमें हमारे समृद्ध और विविध समुदाय का हिस्सा बनातीं हैं।

विश्वभर में भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भाषाएं संचार का माध्यम होती हैं और विभिन्न समुदायों को एक साथ जोड़ती हैं। भाषाओं का समृद्ध और विविध विरासत मानवता की समृद्धि और सहयोग की नींव है। इसलिए, हमें अपनी भाषाओं का मान्यता और सम्मान करना चाहिए, ताकि हम सभी एक साथ आगे बढ़ सकें।

गुरू विद्यापीठ रोहतक एवं बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस, बेगलूरू के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध आलेखों का यह विशेषांक सभी शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों के लिए बहुउपयोगी सिद्ध होगा और भविष्य में आप सभी विद्वतजन का हमें इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा ऐसी कामना के साथ आप सभी विद्वतजन का हृदय की गहराईयों से आभार।

–डॉ. विकास शर्मा

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
April 2024

ISSN : 2395-7115
Page No. : 11-14

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

गांधी जी के भाषण का प्रवासियों पर प्रभाव – अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'गांधी जी बोले थे' के सन्दर्भ में

V. Amudha, Research Scholar (UP21G9651003)

Dr. Anuradha Pakalapati, Assistant Professor,

Department of Hindi, Vels Institute of Science and Technology (VISTAS) Pallavaram.

सार :–

इस प्रपत्र में अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'गांधीजी बोले थे' में से गाँधीजी के भाषण का अंश प्रस्तुत किया गया है। उनके भाषण का प्रवासी मजदूरों पर प्रभाव को भी दर्शाया है। गाँधीजी के भाषण सुनकर मजदूरों को अन्याय, शोषण और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा मिलती है।

मुख्य शब्द :– भाषण, शिक्षा, मजदूर, राजनीति, प्रवासी।

प्रस्तावना :–

महात्मा गाँधी हमेशा लोगों से कहते है कि जो बदलाव दुनिया में देखना चाहते हो, पहले उसे खुद में लेकर आए। गांधीजी जिन सिद्धांतों को प्रतिपादन किया, वे सिर्फ सैद्धांतिक न होकर उनके स्वयं के अनुभवों पर आधारित थे। गाँधी जी ने हमेशा 'ईश्वर सत्या है' के स्थान पर 'सत्य ही ईश्वर है' का सिद्धांत प्रतिपादन किया। वे हमेशा कहते हैं 'लाखों–करोड़ों गूंगों के हृदयों में जो ईश्वर विराजमान है, मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। मैं व्यक्तिगत रूप से भगवान् को नहीं मानता, मेरे लिए सत्य ही ईश्वर है।"[1] जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में रहते थे, श्री गोपालकृष्ण गोखले ही उन्हें भारत में खींच लाए थे। गांधीजी को महसूस हुआ कि कई देशों में रंग–भेद के कारण मानव अधिकारों में भेदभाव चलता ही था और वह आज भी चल रहा है। इस शोध प्रपत्र में मॉरिशस में गांधीजी का आगमन और प्रवासी भारतीयों पर उनका भाषण का प्रभाव को विस्तार रूप से दर्शाया है।

विषय :–

गांधीजी बोले थे उपन्यास में चित्रित गांधीजी का भाषण यह प्रपत्र अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'गाँधी बोले थे' पर आधारित है। यह उपन्यास गिरमिटिया मजदूरों पर आधारित है। इस उपन्यास के नायक प्रकाश के माध्यम से मॉरिशस में शोषित मजदूर–किसानों के जीवन में आए क्रान्ति को अभिमन्यु अनत जी खूब दर्शाते हैं। यह उपन्यास गिरमिटिया मजदूरों पर आधारित है। इस उपन्यास में परकाश के साथ मदन भी एक मुख्य पात्र है। मदन एक मजदूर है और क्रांतिकारी नेता भी है। वह प्रवासी मजदूरों के हक के लिए सरदारों के खिलाफ

लड़ रहा है। वह बैठक में प्रोत्साहन देने वाली बड़े–बड़े बातें करता है।

बस्ती में यह बात फैल गई है कि भारत से एक बड़े वकील मोहनदास करमचंद गांधी आने वाले हैं। सब उनके बारे में जानने के लिए उत्सुख थे। बस्ती में रहने वाली मीरा ने कहा कि गांधीजी बुद्धि का बड़ा ताकतवर हैं। बस्ती के एक मजदूर हनीफ ने कहा कि गांधीजी इस मुल्क के राज्यपाल के यहाँ ठहरेंगे। गांधीजी के भाषण सुनने के लिए बस्ती से तीस लोग तैयार हुए। उनको हार डालने के लिए बस्ती के एक मजदूर दावूद मियां को चुना गया। बस्ती का एक लड़का प्रकाश भी गांधीजी को हार पहनाने के लिए मचल रहा था। इसलिए मीरा ने दो हार तैयार किए। भाषण सुनने के लिए मजदूरों ने बस्ती के प्रमुख सरदार से छुट्टी माँगने के लिए उनके सामने गए। सरदार उनको छुट्टी देने से इनकार कर दिया। बिना इजाजत के जाने के लिए सभी तैयार हुए। सब रेलगाड़ी में जाने के लिए चल पड़े। बस्ती के एक मजदूर भरतलाल ने मदन से जानना चाहा कि गांधीजी कितने दिन टापू में रहेंगे। किसी ने कहा कि यहाँ आए दस दिन हो गया और उतने दिन ठहरकर भारत वापस जाएँगे।

मदन को एकाएक सोमारू नामक एक मजदूर की याद आ गई। भारत से जहाज में आए सोमारू रोलाँ साहब की कोठी में काम करने गया। उसके साथ सात वर्ष की बेटी और बारह साल का बेटा भी था। जहाज पर जो घटना सोमारू पर बीता, उसकी चर्चा करने के लिए वह तैयार नहीं था। इस द्वीप में आते ही दोनों बच्चे को फंदे डालकर और खुद वह फाँसी डालते वक्त उसने कहा 'मेरे साथ धोखा हुआ है। मुझे और मेरे बच्चों को मेरे देश लौट जाने दो।'[2] मदन ने सोचा कि 'हर कोई आया था पत्थर के नीचे से सोना निकालने और हर कोई पाता रहा गोलियाँ और डण्डों की बौछार।"[3] मदन ने ही उसके लाश को नीचे उतरवाया। लोग झपट रहे थे गांधीजी के दर्शन के लिए और मदन भी गांधीजी के भाषण सुनने के लिए बेताबी से इंतजार कर रहा था। धनपत अपने–आप पूछा कि क्या गांधीजी के आने से स्थिति में बदलाव आएगा। मदन ने कहा कि तुम लोग औरों से विश्वास करना छोड़कर अपने–आप पहले बदलो। रेलगाड़ी डेढ़ घंटे देर से पहुँची। डब्बे भरे हुए थे। धनपत के सहारे मदन डब्बे में चला गया। मदन प्रकाश के बारे में जानना चाहा। धनपत ने कहा कि वे लोग दुसरे डिब्बे में हैं। मदन चाहता था कि गांधीजी के व्यक्तित्व का प्रभाव प्रकाश पर पड़े तो बेहतर होगा। मदन हमेशा सोचता था कि प्रकाश सबसे भिन्न हो और वह मजदूरों के आंदोलन को संभाले और उनका नेतृत्व करे। पढ़ाई में भी प्रकाश अपने उम्र के बच्चों से दोगुनी भी आगे था। 'नदिया रामपार' स्टेशन पर सभी उतरकर एक साथ जुटे। बहुत लोग स्टेशन पर इकट्ठे हो गए। मदन ने प्रकाश को आगे जाने के लिए कहा क्योंकि वह गांधीजी को हार पहनना है। गांधीजी मंच पर चढ़कर सबको नमस्कार करते हुए देखा। काले सूट में थे। उनके उपस्थिति भारतीय वंशजों को एक आत्मगौरव की बात थी। सबने गांधीजी के लिए जयकार किए।

गांधीजी का भाषण :–

मदन गांधीजी की महिमा को मन ही मन महसूस किया। जब प्रकाश ने गांधीजी को माला डाला, तब उन्होंने उसका नाम पूछ। उसने गंभीरता से कहा उसका नाम प्रकाश है और यह भी बताया कि 'प्रकाश' माने 'रौशनी' है। गांधीजी भी खुशी से बोले कि वह सचमुच ही रोशनी है। मदन को गांधीजी की बातें अद्‌भुत लगा। गांधीजी ने अपने भाषण में कहा 'मैं जानता हूँ कि इस देश को समुद्र बनाने में आप लोगों का कितना बड़ा योगदान रहा है। भारतीय मजदूरों ने एक जंगल को फुलवारी बना दिया है।'[4] उन्होंने आगे यह भी कहा कि इस देश की हरियाली और समृद्धि के पीछे भारतीय मजदूरों का बहुत बड़ा योगदान है। मदन दोहरी संतुष्टि का

अनुभव किया जब उसने सुना कि प्रकाश भी गांधीजी की बातों को ध्यान से सुन रहा था। गांधीजी मुख्यतः अपने भाषण में दो विषयों का अनुरोध किया :– 1 लोगों को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेना होगा ताकि वे उनके अधिकारों को पा सके। 2 मजदूरों को अपने बच्चे को सही शिक्षा देना आवश्यक है। इससे राष्ट्र सर्वस्व बनेगा।

इन बातों को सुनकर मदन को अपनी उमंगें पैदा होने लगी। वह गांधीजी के चरणों को स्पर्श करने को चाहा। गांधी जी जो बातें कहे वही मदन के पिता किसन भी व्यक्त किया। किसन हमेशा कहता रहता है – 'हमारी छोटी–छोटी सभाओं से तब तक कुछ नहीं हो पाएगा जब तक कि उस बड़ी सभा में हमारे लोग बैठने के हकदार नहीं होते। उस राजसभा में हमारा तो कोई नहीं है, जो हमारे लिए बोल सके।"[5] असलियत तो यह है कि इलाके में एक ही स्कूल है और वह भी तीन मील की दूरी पर है। उसमें सभी बच्चों को जगह मिलना भी तो नामुमकिन था। वह बस्ती के मुखिया होने के नाते उन लोगों को कुछ करना चाहता है। मदन ने जो भी बच्चों को सिखाया, वह उनके भीतर अपनी संस्कृति के प्रति लगाव बढ़ाता है, फिर भी यह शिक्षा प्रतिष्ठा और अधिकार हासिल करने में काफी नहीं है। इसलिए मदन को लगा कि उन बच्चों को अंग्रेजी–फ्रेंच सीखना जरूरी था।

मदन जब नींद में था तब गांधीजी उसके स्वप्न में आए, तब मदन ने गांधीजी को वचन दिया कि वह बस्ती के बच्चों को अवश्य स्कूल भेजेगा। इस बात को सुनकर गांधीजी ने उसको गले लगाया। वह सोच में पड़ गया कि शायद ग्यारह वर्षीय प्रकाश को स्कूल में दाखिला मिलेगा या नहीं। मदन को जब पता चला कि गांधीजी शहर के बंदरगाह के सामने ही एक होटल में ठहरे हैं, मदन उनसे मिलने के लिए चार व्यक्तियों के साथ शहर पहुँच गया। तब गांधी गाँव के लोगों के सामने खड़े होकर बोले कि भारत और मॉरिशस दोनों देशों की इज्जत मजदूरों के हाथों में है। तब मदन मन में सोच लिया कि प्रकाश अपना देश और मॉरिशस का नाम अवश्य रोशन करेगा। वह बच्चों को स्कूल में भर्ती करने का उपाय सोच रहा था। मदन ने मीरा से कहा कि इस स्कूल के मामले में बात करने के लिए वह मजदूरों के रक्षक से मिलेगा। मजदूरों को भड़काने के आरोप में जब उसे सात वर्ष की कैद की सजा मिली। जेल में उसके साथ रामसिंह की बस्ती की एक आदमी प्रेमसिंह से मुलाकात हुई। प्रेमसिंह अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों पढ़ना–लिखना जानता था। मदन के पूछने पर प्रेमसिंह ने कहा कि उसकी बचपन बस्ती के स्कूल के पिछवाड़े में बैठकर, अध्यापक बच्चों को पढ़ाते–लिखते देखकर वह पढ़ना–लिखना जान लिया। उस पढ़ने का लगन था। प्रेमसिंह की रिहाई मदन से पहले ही हुई। अब मदन प्रेमसिंह से मिलना चाहा। प्रेमसिंह का मानना है कि देश के काम–काज और राजनीति में सक्रिय भाग लेना जरूरी है। इसलिए बड़े लोगों की भाषाएं सीखना आवश्यक है। बस्ती के मजदूर सोनवा को साथ लेकर मदन रामसेवक की बस्ती में निकल पड़ा। गाँव जाकर मदन को पता चलाकि प्रेमसिंह स्टेशन पर झंडी दिखाने का काम करता है। मदन प्रेमसिंह से मिला। प्रेमसिंह ने मदन को अंधे पाकर आश्चर्य हुआ। दोनों बैठकर बात करने लगे। मदन ने प्रेमसिंह से पूछा कि वह गांधीजी के भाषण सुनने गया कि नहीं। प्रेमसिंह ने कहा कि गांधीजी के भाषण सुनने वालों में वह पहला आदमी था। मदन प्रेमसिंह से बच्चों की पढ़ाई की सिलसिले में बात कर रहा था। मदन उससे इस विषय में मदद माँगा। प्रेमसिंह ने मदन की बस्ती के बारे में पूछने पर मदन ने उत्तर दिया कि 'वही जो कल थी। सभी कुछ मालिक की मर्जी पर है। जब चाहे कोड़े बरस जाते हैं। कोई जरा–सा भी सर उठाने का प्रयास करे कि उसे कुत्ते लपका दिया जाते हैं। आज भी कीड़ों से खद–खद भरे चावल ही हमें मिल रहे हैं।'[6] प्रेमसिंह ने कहा कि कई बस्तियों में मजदूर अपने अधिकार के लिए हड़ताल करने के लिए खड़े हो गए हैं। प्रेमसिंह ने मदन

को सहयोग देने का वादा किया। मदन को अब अपना निर्णय पर बल पकड़ चुका हैं। प्रेमसिंह की बातों से मदन को एहसास हुआ कि महात्मा गाँधी की भाषण में सच्चाई है।

निष्कर्ष :–

गाँधीजी ने जो भाषण दिए, वह सिर्फ मॉरिशस के भारतवासियों पर नहीं, बल्कि अन्य धर्म और जाति के लोग की विचारधारा पर प्रभावित हुआ। शिक्षा की महत्त्व और राजनीति में सक्रियता से भाग लेना – इन दोनों विषय जो गाँधीजी के भाषण के मुख्य मुद्दे हैं – ये प्रवासी समाज पर लागू होने लगा। गाँधी का अटल विश्वास था कि शिक्षा ही एक मनुष्य के उन्नति का एकमात्र साधन है। वर्तमान समय में मॉरिशस के भारतवासी शिक्षा में उन्नति करके हर क्षेत्र में काम करने लगे हैं और राजनीति में भी कुशलता से भाग लेकर समाज के विकास में सहयोग दे रहे हैं। मॉरिशसवासी प्रत्येक साल महात्मा गाँधी के जयंती को हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हुए उनको अपना श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और देश के लिए उनके योगदान को कृतज्ञता के साथ स्मरण भी करते हैं। सन 1970 में मॉरिशस सरकार द्वारा महात्मा गाँधी संस्थान स्थापित किया गया, जो देश में उच्चतम अकादमिक संस्था है, जिसे गाँधीजी के सिद्धांतों के प्रति देश की प्रतिबद्धता प्रदर्शन के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। मॉरिशस सरकार ने कृतज्ञता के संकेत के रूप में महात्मा गांधी को मेट्रो स्टेशन समर्पित किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत–मॉरिशस साझेदारी धार्मिक संबंध के प्रमुख स्तंभ के रूप में उभरी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. www.setumarg.in/2021/03/Gandhi_and_Mauritius-html
2. अभिमन्यु अनत, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 64
3. अभिमन्यु अनत, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 64
4. अभिमन्यु अनत, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 67
5. अभिमन्यु अनत, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 68
6. अभिमन्यु अनत, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 77

E mail : amudhav_79@yahoo.com

Phone number : 9840824531